

Xxxix(a)-BR(H)-11

राजस्व मण्डल, मध्य प्रदेश ग्वालियर

प्रकरण क्रमांक निगरानी/573-दो/2005

जिला विदिशा

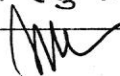
स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभि.के हस्ता.
14-12-15	<p>यह निगरानी अपर आयुक्त, भोपाल संभाग, भोपाल द्वारा प्रकरण क्रमांक 82/2002-03 अपील में पारित आदेश दिनांक 22-01-2005 के विरुद्ध म0प्र0 भू राजस्व संहिता, 1959 की धारा 50 के अंतर्गत प्रस्तुत की गई है।</p> <p>2/ निगरानी मेमो में वर्णित आधारों पर आवेदक के अभिभाषक श्री आर0एस0सेंगर एवं अनावेदक के अभिभाषक श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी के तर्क सुने तथा उपलब्ध अभिलेख का अवलोकन किया गया।</p> <p>3/ आवेदक के अभिभाषक का तर्क है कि जब अपर कलेक्टर विदिशा द्वारा प्रकरण क्रमांक 12/97-98 अपील में आदेश दिनांक 20-8-2002 पारित किया गया, उसके बाद आवेदक नत्थूसिंह (अब मृतक) बीमार हो गया जो दिनांक 15-10-2002 से दिनांक 1-4-2003 तक बीमार रहा। हालांकि चिकित्सक ने दिनांक 1-4-2003 को उसे चलने फिरने लायक करार दे दिया, किन्तु वास्तविक रूप चार माह तक नत्थूसिंह बीमार रहने से शारीरिक स्थिति से कमजोर होकर टूट चुका था तथा 1-4-2003 के बाद भी वह पूर्णरूपेण स्वस्थ नहीं था। नत्थूसिंह की गंभीर बीमारी एवं कमजोरी के कारण आवेदक प्रेमसिंह उसकी सेवा में लगा रहा जिसके कारण वह अंचलीय क्षेत्र स्थित ग्राम खेजड़ा तहसील नटेरन से विदिशा समय पर नहीं आ सके एवं अपर आयुक्त के समक्ष समय पर अपील नहीं कर सके। जब अपर आयुक्त के समक्ष दिनांक</p>	

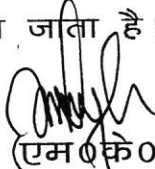
निगरानी क्रमांक/573-दो/2005

5-4-2003 को अपील की गई, अपर आयुक्त ने अवधि विधान की धारा-5 के आवेदन में दिये गये विवरण पर विश्वास नहीं किया एवं मात्र 5 माह के विलम्ब को क्षमा न करने में भूल की है क्योंकि अपर कलेक्टर के आदेश के विरुद्ध कमिश्नर को अपील करने हेतु तत्समय निर्धारित अवधि 3 माह थी इस प्रकार मात्र 2 माह कुछ दिन का विलम्ब सदभावना पर आधारित होने के बाद भी क्षमा नहीं किया गया है एवं आवेदकगण को न्याय से बंचित किया गया है। अनावेदकगण के अभिभाषक ने इसका विरोध कर अपर आयुक्त के विलम्ब वावत् लिये गये निर्णय को सही होना बताते हुये निगरानी निरस्त करने की मांग रखी।

4/ उभय पक्ष के अभिभाषकों के तर्कों पर विचार करने एवं अपर आयुक्त न्यायालय के प्रकरण के अवलोकन पर पाया गया कि आवेदकगण ने अपर आयुक्त के समक्ष अपील मेमो के साथ अवधि विधान की धारा-5 का आवेदन प्रस्तुत किया है जिसके पुष्टिकरण में चिकित्सा प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत किया है। जहां तक अपर आयुक्त के निष्कर्ष में चिकित्सा परिचर्या के पर्चे प्रस्तुत न किये जाने का प्रश्न है ? अपर आयुक्त का इस प्रकार का निर्णय उचित नहीं ठहराया जा सकता। वैसे भी अपर कलेक्टर की आर्डरशीट दिनांक 27-6-2001 के अवलोकन पर पाया गया कि इस दिन लेखी बहस के आधार पर प्रकरण आदेश हेतु दिनांक 20-7-2001 को नियत किया गया, किन्तु आदेश की तिथि किसी भी पक्षकार को टीप नहीं कराई गई। पेशी 20-7-2001 को आदेश पारित नहीं हुआ , उसके बाद निरन्तर 4-9-2001, 19-11-2001, 19-12-2001, 21-2-2002, 15-4-2002, 21-5-2002, 4-7-2002, 20-8-2002 तिथियों आदेश हेतु नियत की गई , इनमें से कोई भी तिथि किसी

R



स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभि.के हस्ता.
	<p>भी पक्षकार को टीप नहीं कराई गई एवं 20-8-2002 को अंतिम आदेश पारित कर दिया गया और यह आदेश आवेदकगण पर सँसूचित भी नहीं किया गया, जबकि आवेदक न्यायालय में न आ पाने का कारण चिकित्सा प्रमाण पत्र सहित बीमार होना बता रहे हैं।</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. भू राजस्व संहिता, 1959 म0प्र0 - धारा-47 आदेश की कोई सँसूचना नहीं दी गई - आदेश की जानकारी होने के दिनांक से परसीमा की गणना की जायेगी। 2. भू राजस्व संहिता, 1959 (म0प्र0) - धारा-47-परिसीमा अधिनियम, 1965 - धारा-5 - निगरानी में विलम्ब क्षमा किया गया - मामला अधीनस्थ न्यायालय को गुणदोष पर आदेश पारित करने हेतु प्रतिप्रेषण होगा। <p>अतएव पाया गया कि अपर आयुक्त, भोपाल संभाग, भोपाल ने आवेदकगण द्वारा प्रस्तुत अवधि विधान की धारा-5 के आवेदन को स्वीकार न करने में भूल है।</p> <p>5/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर निगरानी स्वीकार की जाकर अपर आयुक्त, भोपाल संभाग, भोपाल द्वारा प्रकरण क्रमांक 82/2002-03 अपील में पारित आदेश दिनांक 22-01-2005 त्रुटिपूर्ण होने से निरस्त किया जाकर प्रकरण अपर आयुक्त, भोपाल संभाग की ओर हितबद्ध पक्षकारों को श्रवण कर गुणदोष के आधार पर आदेश पारित करने हेतु वापिस किया जाता है।</p> <p style="text-align: center;">  (एम0के0सिंह) सदस्य राजस्व मण्डल मध्य प्रदेश ग्वालियर </p>	